



संयुक्ता



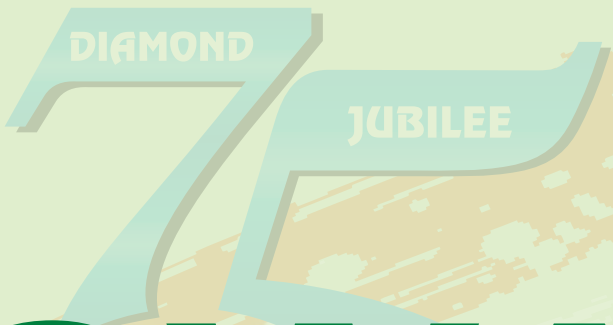
वर्ष 2 अंक 1

अगस्त - अक्टूबर 2014





सार्थक सहयोग सर्वदा



DIAMOND
JUBILEE

CWA



The background features a large, stylized '75' in light blue and orange. The word 'DIAMOND' is written in white on the top left of the '7', and 'JUBILEE' is written in white on the top right of the '5'. Below the '75' is the CRPF emblem, which includes a wheel and the text 'CENTRAL RESERVE POLICE FORCE'.

*CRPF Family Welfare
Association*

*Service & Payroll
1939-2014*

Editorial Board

Smt Suneeta Trivedi	:	Chief Patron & President “Sanrakshi”, CRPF Family Welfare Association
Smt Mini Jha	:	Vice President, CRPF Family Welfare Association
Dr Anjali Nirmal	:	Chief Editor & Chairperson, Magazine Committee
Sh Tamal Sanyal	:	Concept, Layout, Design and Editorial Assistance
Photos	:	Photo Cell CRPF & CWA

“संरक्षी” – सार्थक सहयोग सर्वदा

Cover photo caption : Sh Rajnath Singh, Hon'ble Union Home Minister
during his visit to CRPF HQrs.



संयुक्ता



सावित्री सिंह

38 अशोक रोड, नई दिल्ली
दूरभाष: 011-23354184
Email: 38ashokroad@gmail.com

दिनांक: 09 अक्टूबर, 2014

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल इस वर्ष "हीरक जयंती वर्ष" मना रहा है। के.रि.पु.बल नक्सलियों, विध्वंसकारियों और आतंकवादियों की नापाक गतिविधियों और षड्यंत्रों से भारत के नागरिकों की जान-माल की सुरक्षा करने का एक अति महत्वपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण कार्य करता है।

के.रि.पु.बल ने पंजाब में आतंकवाद को समाप्त करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान में भी के.रि.पु.बल पूर्ण शक्ति एवं समर्पण भाव से वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्रों में नक्सली खतरे, जम्मू कश्मीर में आतंकवाद तथा पूर्वोत्तर में विद्रोहात्मक गतिविधियों का मुकाबला करने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। वीरता, अनुशासन और कर्तव्य परायणता के लिए प्रसिद्ध के.रि.पु.बल के जवानों ने बड़ी संख्या में कर्तव्य की वेदी पर अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दिया है। इस बल ने अपनी स्थापना के पश्चात कई शौर्य एवं उत्कृष्ट सेवा पदक भी प्राप्त किए हैं।

वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी 2014 के विमोचन के अवसर पर मैं के.रि.पु.बल के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं तथा आशा करती हूं कि भविष्य में भी के.रि.पु.बल अपने लक्ष्य के प्रति सदैव प्रतिबद्ध, समर्पित एवं सतर्क रहकर देशसेवा में कार्य करता रहेगा।

सावित्री सिंह

(सावित्री सिंह)

पत्नी श्री राजनाथ सिंह
केन्द्रीय गृहमंत्री



संयुक्ता



Dilip Trivedi



महानिदेशक के.रि.पु.बल
DIRECTOR GENERAL, CRPF

MESSAGE

I am happy to learn that the CRPF family Welfare Association is organizing its Annual FWC Exhibition in October, 2014 and also bringing out a Souvenir on this occasion.

It is also an opportunity for all of us to salute the dedication to duty of the CRPF personnel, many of whom have laid down their lives in service of the nation. I can well understand the anguish and pain of the bereaved families of CRPF personnel, and the perpetual anxieties of CRPF wives whose men-folk are on the fore-front combating various kinds of violence in different parts of the country. The men of the CRPF do a most challenging job, and it must indeed be a great comfort to them to know that their families have a strong support system provided by the CRPF Family Welfare Association.

I send my greetings and felicitations to the organizers and my very good wishes for the success of the Exhibition and the Souvenir.

(Dilip Trivedi)

October 10, 2014



संयुक्ता



अध्यक्षा 'कावा' की कलम से



सुनीता त्रिवेदी

मुझे यह कहते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि बल के हीरक जयन्ती वर्ष के इस अवसर पर वार्षिक कल्याण प्रदर्शनी 2014 के उपलक्ष में संयुक्ता मैगजीन का विशेष अंक प्रकाशित हो रहा है। बल में परिवार कल्याण केन्द्र तथा कावा द्वारा संचालित गतिविधियों के माध्यम से वर्ष भर विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है ताकि हमारे जवान और उनके परिवार आर्थिकोपार्जन के साथ-साथ सृजनात्मक अभिरुचि में भी अभिवृद्धि कर सकें।

जवानों के परिवार के सर्वांगीण विकास से संबंधित मौलिक पहलुओं, जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य, कल्याण, कैरियर परामर्श इत्यादि शामिल हैं, के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रत्येक स्तर पर कावा की इकाइयों ने ठोस सफल एवं सराहनीय कदम उठाये हैं जो निश्चित रूप से प्रशंसनीय हैं। आप सभी ने इस तिमाही के लिए निर्धारित लक्ष्यों को सुनियोजित एवं पूर्णतः समर्पित होकर सम्पादित किया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी आप दी गई जिम्मेदारियों का इसी लगन, निष्ठा व कार्यकुशलता से निर्वहन करते रहेंगे।

कावा द्वारा वर्ष 2013-14 के दौरान विभिन्न कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें जोनल स्तर पर मेला प्रदर्शनी का आयोजन करवाया गया। विभिन्न कावा केन्द्रों पर भ्रमण कर उनका मनोबल बढ़ाया गया। बल के विकलांगों के अलावा कैंसर पीड़ितों के लिए एम्स के निदेशक को सहायता राशि प्रदान की गई। सफदरजंग व एम्स अस्पतालों में जरूरतमंदों के उपयोग के लिए एक-एक आश्रय (शेल्टर) तैयार करवाया गया। बतौर चलता-फिरता सुपर बाजार "सम्पूर्ति" वाहन का उद्घाटन कर बल के परिवारों को उचित व सस्ते दामों पर जरूरत का सामान उपलब्ध करा कर उन्हें लाभान्वित किया गया। मथुरा के कनक धारा विधवा आश्रम को आर्थिक सहायता प्रदान की गई। 102 आर0ए0एफ0 के स्वर्गीय सिपाही/चालक राजू साल्वे की 11 वर्षीय पुत्री कु0 प्रियंका के इलाज हेतु आर्थिक सहायता प्रदान की गई। एम्स के सहयोग से अंगदान दिवस मनाया गया। जी न्यूज के सहयोग से पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विभिन्न ग्रुप केन्द्रों में वरिष्ठ नागरिक केन्द्र खुलवाये गये। तनाव मुक्त कार्यक्रम एवं हास्य कार्यक्रमों का आयोजन करवाया गया। बल के जवानों एवं परिवारों के लिए मनोरंजन एवं संगीत कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। द्वारका आवास स्थल के नजदीक निखार ब्यूटी पार्लर का उद्घाटन किया गया एवं बल के विकलांग/अपंग जवानों व उनके परिवारजनों के लिए विकलांग केन्द्र की स्थापना की गई।

अन्त में मैं, आप सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देती हूँ एवं संपादक मण्डल द्वारा किये गये अथक प्रयासों की सराहना करते हुए इस संस्करण के सफल प्रकाशन की कामना करती हूँ।

(सुनीता त्रिवेदी)

अध्यक्षा कावा



डॉ. अंजली निर्मल

मुख्य संपादिका की कलम से

आपकी पत्रिका संयुक्ता का यह अंक प्रस्तुत करते हुए मुझे विशेष प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह अंक केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के हीरक जयंती समारोहों के आयोजन के साथ प्रकाशित हो रहा है। इस अंक में आप अन्य सभी स्थायी वस्तुओं के अलावा पाएंगे संरक्षी (कावा) के पिछले तमाम वर्षों के क्रिया कलापों पर एक विहंगम दृष्टि। यह दृष्टिपात आपको मधुर स्मृतियों की उस मोहक फुलवारी में ले जाएगा जो हम सभी के सामूहिक अतीत का एक अटूट अंग है। हममें से कई उन सभी क्रिया-कलापों के या तो सहभागी रहे हैं या उनके प्रत्यक्षदर्शी रहे हैं। उनके लिए यह अनेक सुखद अनुभवों की स्मृतियों को पुनः ताज़ा कर देगा। नए सदस्यों के लिए यह एक शिक्षाप्रद अनुभव होगा। भविष्य की बुनियाद कहीं न कहीं अतीत से जुड़ी होती है। आप लोगों में से अनेक को एक पंक्ति याद होगी 'सीख हम बीते युगों से नए युग का करें स्वागत'। हमें भी यही आशा है।

इस विशेष अंक को निकालने में आप सभी का सहयोग प्राप्त हुआ है। हम उसके लिए आपके आभारी हैं। आशा है आप भविष्य में भी यह प्रेमभाव बनाए रखेंगे। संयुक्ता आपकी अपनी पत्रिका है। इसे आपके सहयोग एवं प्रोत्साहन के बिना प्रस्तुत करना संभव नहीं है। यह हमारा पाँचवा संस्करण है और आप सबसे यही आशा है कि आप इस पत्रिका रूपी पौधे को बहुत प्रेम एवं सहयोग से सींचते रहेंगे जिससे इसमें नित नये फूल खिलते रहें।

शुभकामनाओं सहित,

अंजली निर्मल

डा. अंजली निर्मल
मुख्य संपादिका 'संयुक्ता'



संयुक्ता



Musings of a CWA Rookie

This year as the Central Reserve Police Force celebrates the 75th year of its raising, the CRPF Family Welfare Association (CWA) is proud to present the latest edition of Sanyukta that highlights the steady stream of contributions made by various members of the association. We are particularly proud of the fact that CWA has been able to undertake a gamut of activities under the able leadership of Smt. Suneeta Trivedi, who, as the President of this association, has ensured that we strive to achieve our goals and fulfil the social welfare mandate of CWA.

Since its inception in 1995, CWA has partaken in activities that have created an enabling environment for the welfare of CRPF jawans and their families. Over the past year, CWA has made great strides in the sphere of promoting education for children and adults, capacitating women through vocational education, and has carried out a host of activities

for the differently-abled and underprivileged. The Miracle on Wheels event in September 2013, which showcased the talent of the differently-abled from the Ability Unlimited Foundation, is one such example of how Smt. Trivedi has acknowledged the principle of inclusivity, a mandate that CWA is trying to fulfil through its activities. Similar strides were made by her earlier this year at the Humanity Confluence, aimed at establishing closer ties with the community, where cricketer Gautam Gambhir interacted with children at Emmanuel Children Home, an orphanage. He instilled in them the confidence needed to achieve their goals.



Mini Jha
Vice President,
CWA



As the largest paramilitary force in the world, CRPF is the peacekeeper to the nation. The high-stress work environment and the perils of this job bring with it the recognition that in order to maintain peace and security within the country the health and well-being of our officers and jawans is also paramount. Having recognised

the need for better lifestyle management, CWA under Smt. Trivedi's guidance organised the Diamond Jubilee Lecture Series on World Cancer Day in February 2014. Mr. Jairam Ramesh, former union minister for rural development was the chief guest at this event.

Smt. Trivedi's active role in CWA is the true

embodiment of what CRPF stands for and what its motto conveys – '**Service and Loyalty**'. The recently organised 'Run for Unity' marathon that brought together a host of sportspersons and CRPF personnel, including boxing champion Mary Kom and cricketer, Virender Sehwag, highlights CWA's responsibility in promoting





unity and rendering our service towards building a strong democracy. At the same time, promoting India's culture and a multitude of traditions is also what CWA strongly believes in, particularly through the CRPF annual melas. Smt. Trivedi has been proactive in ensuring that the annual melas held every year showcase the best facets of what different regions in India have to offer- an amalgamation of art, culture and values, and an opportunity to empower women and showcase their hardwork.

These examples are just a small glimpse of the exemplary work being done by CWA in trying to improve the lives of our officers, jawans and their families. Smt. Trivedi, a former civil servant, has played an important role in pushing for a multitude of changes and activities, enabling different sections of our CRPF community to rise to their full potential. We hope that in the coming months, CWA is able to do much more and learn a lot more from Smt. Trivedi's experience in having served the nation.





संयुक्ता



South Zone Group Centre, Hyderabad



The CWA Raising Day was celebrated with much fanfare



Free Heart check-up was conducted for the needy



Senior Citizens' Day was marked with respect and assistance to elders



Smoking Kills : No smoking day was observed



World Asthma Day



South Zone

Group Centre, Hyderabad



A proud father of a Montessori child receives a prize



Preventing the deadly : World Cancer Day enlightened about the disease



DIG GC Hyderabad explained the importance of health on the occasion of World Health Day

अगस्त - अक्टूबर 2014

Apparel Training and Designing Course

A 45 days Sewing Machine Operator Course under the aegis of Apparel Training and Design Centre (ATDC), Hyderabad, was inaugurated by Smt. Suneeta Trivedi, President CWA on 28.11.2013 at FWC Hyderabad. Aim of the course is to impart basic skills to new entrants and up-skilling the existing participants, the basics of cutting and stitching patterns. The institute also helps in placements after successful completion of the course. So far 2 batches have been completed and third is running. Details are as under:-

Sl.No.	From	To	Nos of Trained
1	16.12.2013	15.02.2013	43 Nos
2	15.04.2014	17.06.2014	50 Nos
3	22.08.2014	—	50 Nos (Under Training)

Pre-Primary Teacher Training Course

Month Pre-Primary Teacher Training Course under the aegis of SETWIN (Department of Youth service, Government of Telangana), was inaugurated by Smt. Karthikeyni, Patron RCWA GC, CRPF, Hyderabad in presence of Managing Director SETWIN Shri Subhash Chandra Bose on 27.08.2014 at Family Welfare Centre. Aim of the Course is to provide the best employment opportunities in preprimary schools. 32 ladies have enrolled for the course.



President of CWA lighting the lamp during ATDC CSN ART course at FWC GCH



Sh Subhash Chandra Bose, MD SETWIN delivering his address



Scene of the Centre



संयुक्ता



South Zone Group Centre, Hyderabad



Towards true empowerment : Children learning self-defence skills



Yoga Classes by CWA



Group Centre, Pallipuram



A sweet making instruction class in progress



Class of Montesorri Children



Making them farsighted : Free eye testing camp by CWA



Smt Suneeta Trivedi, President CWA during her visit to GC Pallipuram

South Zone Group Centre, Avadi



Summer Camp



Jewellery Designing



Sh M.S. Raghava, ADG South Zone interacting with children in a Creche opened for working mothers by CWA



Karate Grading



International Women's Day



Unity is strength : Family Welfare Meet

प्रगति की ओर अग्रसर “कावा”



सुष्मा पांडे
सचिव, कावा

मैं अपने लेख के माध्यम से आप सबके साथ “कावा” का इतिहास व कावा द्वारा इस वर्ष उठाये गये सराहनीय कदम के बारे में जानकारी बाँटना चाहती हूँ। हमारी “कावा” यानि की सी.आर.पी.एफ. वेलफेयर एसोसिएशन को अब हमारी कावा अध्यक्षा द्वारा इसका दायरा बढ़ा करके इसे सी.आर.पी.एफ. फेमिली वेलफेयर एसोसिएशन (कावा) कर दिया गया है। “कावा” का जन्म 22 जून 1995 में गैर सरकारी संस्था के तौर पर हमारे बल के परिवारों के कल्याण की देखभाल करके हेतु अस्तित्व में आई। क्योंकि हमारे जवान ड्यूटी पर बाहर होने के कारण घरेलू समस्याओं पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते हैं। अशांत क्षेत्र जैसे श्रीनगर, पूवोत्तर, नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में परिवार साथ नहीं रख पाते हैं। इस संस्था को दिल्ली सरकार के पंजीकरण अधिनियम 1860 (21 वाँ अधिनियम) के अंतर्गत पंजीकृत कराया गया है। “कावा” एक गैर लाभ अर्जन करने वाली संस्था व आयकर विभाग के पास एक गैर सरकारी संस्था के रूप में भी पंजीकृत है।

इस संस्था का प्रमुख कार्य के.रि.पु.बल के सदस्यों एवं उनके परिवारों का कल्याण, विधवाओं का पुर्नवास, बच्चों की शिक्षा की उचित व्यवस्था, Health awareness, programmes, scholarships और रोजगारपरक कोर्स कराकर नौकरी के अवसर उपलब्ध कराते हुये महिलाओं को सशक्त बनाना है। विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हुये “कावा” बहुत ही अनुकरणीय तरीके से कल्याणकारी योजनाओं को अंजाम देते हुये निरंतर पथ पर अग्रसर हो रहा है।

इस वर्ष भी हमने विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को आयोजित करके के.रि.पु.बल के परिवार के सदस्यों को प्रत्येक क्षेत्र में जागरूक किया है। “कावा” के तत्वाधान में गर्मियों की छुट्टियों के दौरान बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं अवकाश का सदुपयोग करने की दृष्टि से के.रि.पु.बल के लगभग प्रत्येक सेक्टर एवं प्रशिक्षण संस्थान में समर कैम्पों का आयोजन करवाया गया। उसी प्रकार IX से XII कक्षा तक के बच्चों के लिये कोचिंग क्लास और कैरियर काउंसलिंग का आयोजन किया जा रहा है। ताकि वे अपने Career के लिये योजना बनाते हुये भविष्य उज्ज्वल कर सकें। इन प्रयासों से

अनेक क्षेत्रों में कई पहल, परिवार कल्याण केन्द्रों के माध्यम से परिवारों के लिए अतिरिक्त आय अर्जित करना, विधवाओं विकलांग कार्मिकों का पुर्नवास, कावा सदस्यों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देना शामिल हैं।

इसी क्रम में वर्ष 2013 से अब तक कावा संस्था द्वारा मुख्य-मुख्य कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन किया:-

क्र. सं.	दिनांक	आयोजित किये गये मुख्य-मुख्य कार्यक्रम/समारोह
01	17/10 To 19/10	जम्मू-कश्मीर तत्वाधान में दिनांक 17/10/13 से 19/10/13 तक सीआरपीएफ मेला/प्रदर्शनी का आयोजन किया गया विभिन्न परिवार कल्याण केन्द्रों के माध्यम से महिलाओं द्वारा किये गये कार्यों को प्रदर्शित किया गया।
02	19/10/2013	समाजिक कार्यों में कार्यरत (Ability unlimited Foundation working as social cause) को वार्षिक प्रदर्शनी के दौरान निदेशक अखिल भारतीय चिकित्सालय (एम्स) के कैंसर रोगियों के लिए कम्बल वितरित किया गया।
03	18/11/2013	डेट अस्पताल, आर.के.पुरम में रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें केरिपुबल, कार्मिकों ने रक्त दान किये तथा रक्त दान की महत्ता के विषय में व्याख्यान दिया।
04	20/11/2013	स्पेशल ड्यूटी ग्रुप (एसजीडी) में काफिला सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस अवसर पर मुख्य अतिथि नफिसा अली अभिनेत्री एवं सामाजिक कार्यकर्ता को आमंत्रित किया गया था।

क्र. सं.	दिनांक	आयोजित किये गये मुख्य-मुख्य कार्यक्रम/समारोह
05	15/11/2013	व्यापार मेले के दौरान केरिपुबल, कार्मिको द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया इस अवसर पर जापान/भारत उद्योग के चेयर मेन Shri Shigemaro Yasui मुख्य अतिथि आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के आय अर्जित करने संबंधी जानकारी/प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
06	10/01/2014	एमटी पार्क महानिदेशालय नई दिल्ली में सम्पूर्ति आउटलेट कावा का उद्घाटन किया गया। इस अवसर श्रीमति उषा रामचन्द्रन पत्नी एचओएम नई दिल्ली मुख्य अतिथि को आमंत्रित किया गया तथा जवानों पत्नियों को रीजनल कावा के माध्यम से बनाये गये उत्पादन को आउटलेट कावा कैटीन में बिक्री करने संबंधी जानकारी दी गयी।
07	04/02/2014	एमटी पार्क महानिदेशालय नई दिल्ली में कैंसर दिवस का आयोजन किया गया इस अवसर पर रोगियों को कम्बल वितरित किया गया।
08	8/3/2014	महिला दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महिलाओं को सामाजिक जीवन यापन करने के लिए एवं आय का साधन अर्जित करने हेतु जागरूक किया गया।
09	26/03/2014	हिन्दी सिनेमा के प्रसिद्ध संगीतमय स्वर्गीय ओ.पी. नैयर के श्राद्धांजली के अवसर पर संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें संगम गुप द्वारा आयोजित संगीत प्रोग्राम प्रस्तुत किया जिसमें कार्यक्रम में आये केरिपुबल के जवानों एवं परिवार का मनोरंजन किया गया।

क्र. सं.	दिनांक	आयोजित किये गये मुख्य-मुख्य कार्यक्रम/समारोह
10	29/05/2014	उत्तर प्रदेश की मुख्यधारा फाउण्डेशन जो सामाजिक गतिविधियों में शामिल हैं, को मथुरा के विधवाओं को उनकी जीवन यापन से संबंधित व्याख्यान दिया।
11	21/05/2014 शौर्या	हीरक जयंती व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत दिनांक 23/5/14 को शौर्या में हास्य कवि श्री सुरेन्द्र शर्मा द्वारा आज के जीवन में तनाव कैसे कम किया जाये इस संबंधन में व्याख्यान दिया गया। कावा द्वारा 12 नवम्बर, 2013 को एम्स ट्रॉमा सेन्टर व सफदरजंग हॉस्पिटल में "आश्रय" यानि रोगियों व उनके रिश्तेदारों को रहने की सुविधा और अन्य प्रकार की सुविधायें मुहैया कराई गई। रोगियों और उनके माता पिता द्वारा हमारी "कावा टीम" को बड़ी ही आशायें भी मिलीं। इसी दौरान कावा द्वारा 13 अगस्त, 2014 को Organ Donation Day मनाया गया। इसमें जवानों के परिवार व अधिकारीगण व उनके परिवारों को डॉक्टरों के द्वारा Organ Donation के लिये सभी को जागरूक किया इसी से संबंधित ढेर सारी जानकारी दी गई। हीरक जयंती व्याख्यान श्रृंखला के अंतर्गत 03.03.14 को श्री शिवखेड़ा जी को आमंत्रित किया गया उन्होंने हमारा के.रि.पु.बल की चुनौतियों से लड़ने व माहौल से सामंजस्य बिठाने के लिये कई महत्वपूर्ण व्याख्यान दिये और इसके पूर्व कावा द्वारा इसी कड़ी में श्री जयराम रमेश (तत्कालीन ग्रामीण विकास मंत्री) ने नक्सल क्षेत्रों में कड़ी परिस्थितियों से जूझ रहे जवानों को हर तरीके, हर संभव मदद का आश्वासन व नक्सल क्षेत्रों के निवासियों को मुख्यधारा से जोड़ने में के.रि.पु. बल के सदस्य मुख्य भूमिका



संयुक्ता



क्र. सं.	दिनांक	आयोजित किये गये मुख्य-मुख्य कार्यक्रम/समारोह
		निभा सकते हैं और उन्होंने विभिन्न प्रकार की जानकारीयों देकर हमारे जवानों व अधिकारीगणों में उत्साह का संचार पैदा किया।
12	17/7/2014	स्वर्गीय सि./चालक राजू साल्वे की पुत्री प्रियंका जिसकी उम्र 11 वर्ष हैं वह Congenital Hairy Nevus एक प्रकार का चर्मरोग से पीड़ित है उसका पिता सि./चा. राजू साल्वे 102 आरएएफ में रहते हुए स्वर्गवास हो गया था उनकी पत्नी उपचार की स्थिति में नहीं थी इसलिए उसको आर्थिक सहायता प्रदान की गई।
13	08/08/2014 शौर्या	विश्वजीत भट्टाचार्य द्वारा "शौर्या" नई दिल्ली में भूले विसरे सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया ताकि बल के जवानों एवं उनके परिवार का मनोरंजन हो सकें।
14	21/08/2014	कावा द्वारा दिनांक 21/08/14 को वृक्षारोपण का आयोजन किया गया तथा केरिपुबल स्कूल सैक्टर 16, द्वारका नई दिल्ली में केरिपुबल की महिलाओं के सुविधा हेतु 'निखार' ब्यूटीपार्लर का उद्घाटन किया गया।

इसी तरह से "कावा" अपने पथ पर निरंतर अग्रसर हैं। सैन्ट्रल कावा द्वारा निधि आरित कार्यक्रमों एवं क्रियाकलापों को धरातल पर उतारने का श्रेय आप सभी को जाता है। आपके सहयोग के बिना किसी भी योजना को पूर्ण कर पाना हमारे लिये संभव नहीं हो सकता। अतः मैं यह आशा करती हूँ कि भविष्य में भी आप सभी इसी प्रकार से "कावा" के क्रियाकलापों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हुये इस सार्थक अभियान को आगे बढ़ाते रहेंगे। "कावा टीम" का भी मैं हृदय से आभार प्रकट करती हूँ। जिनके सहयोग से आज "कावा" बुलन्दियों के शिखर पर हैं।

SPORTS IN COBRA SECTOR

The CoBRA Commandos who are also known as "Jungle Warriors" are not only fighters but they also love to inculcate finer spirit in their persona. This is reflected in their various expression in the form of love to music, arts and sports. Fighting in Jungle needs a high level of team spirit camaraderie, stamina, sense of pride and sound health. Participation in sports is the medium to fulfill all above needs and hence is an essential ingredient in regular routine of a "Jungle Warrior". Sporting events are not only structured by Command function but also initiated at purely individual level too. Their playgrounds spread from a well cultivated ground of a unit Headquarters to undulating fields of team locations in Jungle. Similarly games are not confined to standardized games of urbanities, like volley ball, cricket etc. but also goes to rural games like chase and touch & Gilli Danda.



M.Yadav
Chairperson
Sports Committee, CWA

Playground dilutes rank identities and carries us to a plain where we are just "humans" without losing dignity and respect to each other. Each unit in CoBRA Sector is making sufficient investment in Sports and have all necessary equipments suiting to the needs of all age groups. Hence we can say that organising sports has shown remarkable improvement in force personnel physical health. It has shown force personnel who participate in sports experience positive effects on their mental health and has developed self esteem increasing their confidence. Moreover they develop better social skills and improves mood and mental health.



To wee or not to wee .

The latest addition to the Oxford Dictionary is the Selfie which is the self-portrait taken clandestinely or in company, and submitted to the gaze of thousands, turning each of us into his own paparazzo. It is not a secret—social media has brought out the narcissist in every one of us.

We spend an obscene amount of time on social media. Social media is the new messiah of the internet age. They are what the internet portended for about two decades- the death of solitude. You only need a Facebook/Twitter account and a smartphone to have your virtual societal circle just a click away, 24*7*365. This ever evolving channel has gone past from being merely a platform to interact with people to being an integral part of election campaigns, business promotions, market analyses.

Like any tool, social media can be used and abused depending on the one using it. Some use it for perverted purposes, others, for dubious purposes and still others use it to promote themselves. The good, the bad, the

ugly; the inspirational, the sickening, and the jostling narratives of millions, all exist in that one 140-character line: a tweet. An old carpentry apothegm advises “measure twice, cut once.” The point being, be certain about what you are about to do before you do it. This message certainly holds true in the world of social media, which offers immediate gratification but also a permanent electronic footprint. The predicament is writing the perfect line in 140 characters. Once that is taken care of, admire it as a service to humanity, and post it in cyber space where it lives forever as that five letter word- tweet. Social media space has transformed the face of global, virtual interaction in such a dynamic, dramatic way that never before did words seem so potent, so far-reaching, defying all conventional means of communication.

No matter how much the social media can be misused by vested interests, there is no way of silencing public perception through tweets or status updates. You may be able to send out mails to cronies in media houses to embargo, or worse, kill a story. But no money or clout can muzzle the genuine users online. They will say what they feel, re-tweet what they agree with or erupt with collective indignation over what they view as injustice. And this is precisely where

the social media scores over the mainstream media. Here, there is no official line, no agenda, and no editorial policy. Each man is on his own, with views fearlessly expressed, with or without the armour of anonymity. In many cases, the social media functions like a conscience keeper and even dictates news priorities.

There is also a sort of chain reaction that plays out. Take the case of the law intern who had complained against a senior judicial functionary. It had started with just a blog. That piece was tweeted by a legal website and subsequently the mainstream media picked it up.

Yes, there is the danger of herd mentality, heavily funded tweets, and private internet armies for large scale defamation on these platforms. But, social media has revealed that we, the people, have a voice, and through the democratization of content and ideas we can once again unite around common passions, inspire movements, and ignite change.



Dr. Anjali Nirmal
Chief Editor, Samyukta

Central Zone Group Centre, Bhopal



Learning traits of Embroidery



Painting competition by children



Learning the tricks : CWA members at a stitching class



Pottery painting by CWA members

Central Zone Group Centre, Bilaspur



Children Day



CWA Meeting



Adult Literacy Day





संयुक्ता



Central Zone Group Centre, Durgapur



Smt.Smita Sahay, WO Sh. Vivek Sahay,IGP, visited FWC



Best Welfare Centre Selection At GC Durgapur



Messenger of Peace & harmony



Cultural Activities Organised lby RCWA In GC



Smt.Smita Sahay, Wo Sh. Vivek Sahay,IGP, visited
Tailor Shop

Central Zone Group Centre, Lucknow



The Souvenir of RCWA Lucknow was released by DG & President CWA



Smt Suneeta Trivedi, President CWA viewing a photogallery during Welfare Exhibition in GC CRPF Lucknow



Smt. Suneeta Mishra during plantation with other Regional "SANRAKSHI" members on the occasion of Gandhi Jayanti



Senior Citizen Day



Children during Independence Day



संयुक्ता



Central Zone Group Centre, Mokameghat



Cultural Programme during International Women's Day



The Green Duty : Environment Day

Group Centre, Muzaffarpur



World Health Day



World Heart Day



Clearness Day

Group Centre, Ranchi



International Women's Day



World Malaria Day



Central Zone Group Centre, Rampur



CWA Raising Day



Independence Day



Dance Class



International Women Day



Senior Citizen Day



Literacy Day



संयुक्ता



Central Zone Group Centre, Rampur



World Environment Day



Vocational Training



World Women Day



Yoga Class

Group Centre, Siliguri



Lifting up the spirits : The 'Old Age Day' at GC Siliguri presented a picture of physical destitution on one hand & extreme compassion on the other hand

कावा का सलाम



सुषमा पांडे
सचिव, कावा

सी.आर.पी.एफ. अधिकारियों एवं जवानों को सलाम।
संसार में हमारे देश का नाम हो, उसे आप ही देते हो
अंजाम।
आप सबको हमारी संगिनी “कावा” का सलाम।
हमारे देश का आधार व देश की “रीढ़ की हड्डी” हैं आप।
आप सबने महत्वपूर्ण कार्यों को करने की है ठानी।
देश की आंतरिक सुरक्षा में झोंक दी है अपनी जवानी।
इसलिए देशवासी चारों तरफ से हैं सुरक्षित।
कई दफे ऐसे मौके आते, कि आप अपनी जान देकर चुकाते।
आप सबको हमारी संगिनी “कावा” का सलाम।
जैसे माँ का ऋण कोई भी नहीं उतार सकता।
वैसे ही देशवासी आपके ऋण से मुक्त नहीं हो सकते।
क्या कश्मीर क्या छत्तीसगढ़ क्या पंजाब कहीं नहीं हैं?
हर राज्य में आपकी मौजूदगी है और निष्पक्षता है।
आप सबको हमारी संगिनी “कावा” का सलाम।

देश में कोई भी संकट या चुनाव हो,
अंजाम तक आप सब ही पहुँचाते हो।
बढ़े चलो, बढ़े चलो, रुकना आपका धर्म नहीं,
नदी की तरह बहना ही आपका धर्म हो।
आपके जुड़ाव में बल है,
अपने इस महत्व की भावना को मरने न देना।
आप बूढ़े, बुजुर्ग महिलाओं की जीवन रेखा हो।
आप कितने संतुष्ट होते होंगे, जब किसी की जान बचाते हो।
उस पल उस इंसान के लिये देवदूत बन जाते हो।
वो इंसान जिंदगी रहते तक आपके लिये दुआ करता है।
उन्हीं दुआओं का असर,
जो चुपचाप मुस्कराकर आप इतना महान कार्य कर जाते हो।।
सी.आर.पी.एफ. अधिकारियों एवं जवानों हमारी कावा का सलाम।
आप सबको हमारी संगिनी “कावा” का सलाम।



संयुक्ता



ज्ञान और विवेक

एक बार एक व्यक्ति प्रसिद्ध सन्त के पास गया और बोला “गुरुदेव, मुझे जीवन के सत्य का पूर्ण ज्ञान है। मैंने शास्त्रों का काफी ध्यान से अध्ययन किया है फिर भी मेरा मन किसी काम में नहीं लगता। जब भी मैं कोई काम करने के लिए बैठता हूँ तो मन भटकने लगता है और मैं उस काम को छोड़ देता हूँ। इस अस्थिरता का क्या कारण है। कृपया मेरी इस समस्या का समाधान कीजिए।”

संत ने उसे रात तक इंतजार करने के लिए कहा। रात होने पर संत उसे एक झील के पास ले गए और झील के अन्दर चाँद के प्रतिबिम्ब को दिखाकर बोले, “एक चाँद आकाश में और एक झील में है। तुम्हारा मन इस झील की तरह है। तुम्हारे पास ज्ञान तो है लेकिन तुम इसको इस्तेमाल करने की बजाय सिर्फ उसे अपने मन में लेकर बैठे हो, ठीक उसी तरह जैसे कि झील असली चाँद का प्रतिबिम्ब लेकर बैठी है। तुम्हारा ज्ञान तभी सार्थक हो सकता है जब तुम उसे व्यवहार में एकाग्रता और संयम के साथ अपनाने की कोशिश करोगे। झील का चाँद तो मात्र एक भ्रम है। तुम्हें अपने काम में मन लगाने के लिए आकाश के चन्द्रमा की तरह बनना है। झील का चाँद तो पानी में पत्थर गिराने पर हिलने लगता है पर असली चाँद नहीं। उसी तरह तुम्हारा मन जरा-जरा सी बात पर डोलने लगता है।

अतः तुम्हें अपने ज्ञान और विवेक को जीवन में नियमपूर्वक लाना होगा और अपने जीवन को सार्थक और लक्ष्य हासिल करने में लगाना होगा। खुद को आकाश के चाँद की तरह बनाओ, शुरु में थोड़ी परेशानी आएगी परन्तु कुछ समय बाद तुम्हें इसकी आदत हो जाएगी और तुम अपने हर काम में सफलता को प्राप्त करोगे।

सोनम कुमारी
कक्षा 12वीं

Not Your Fault...

Perhaps the most hilarious thing for neighbours to do was spending time on inventing names for Jessica's sister. It was a big city where they lived, surrounded by 'educated' people who knew all kinds of Financial, technological and political hush-mush. It was hence a little astonishing to see them mock a little girl because she wasn't as white as her sister. The English teacher next door would use terms like 'hideous' while others were usually seen shouting out "Sup negro!"

There was an audition going on for the role of Cinderella in school's annual play. The prettiest girl in town got it. Well nobody cared her language sounded like someone eating and yelling at the same time but doubtlessly she was 'pretty'. Jessica's sister was happy with the wicked step-sister's role. People praised her performance on stage but nobody cared to praise the grace she had beneath that pseudo outer air they considered too dark to cross. She will stand first in class again but the school banner near the airport will feature 'cute' children.... again. Her mother always tells her about the value of inner beauty but will make sure she applies enough make-up before attending a family function.

She never understands her fault when her friends are not able to find her on purpose while playing 'dark room'.

Maybe it was her parents' fault to have deliberately created two kids way different from each other or the doctors' who couldn't forecast it while that life could have been easily ended because sure as hell there is nothing wrong with the elites all around who claim to be best in 'description at first sight'. Maybe that poor kid has no idea that her tears are nothing more than a stupid child's irrelevant demands. The society has always valued pretty white kids and will continue to do so because what has talent got to do with a person's merit? Maybe it's time she realises that she's more unlucky than starving children in Africa to be not as fair as others. Maybe she ought to accept her identity as a living coal..Seldom does she hear, "Dear Emily! Take care of yourslef."

Sakshi Rai



संयुक्ता



*Down
the Memory Lane . . .*

*As the tears would show how lucky we have been;
You would know nothing can destroy the past;
As you gain more to add to those of the past;
Your memories will always carry you far.*





संयुक्ता



*Down
the Memory Lane . . .*

*As I step back in time, allowing my mind to wander;
I remember yesterday,
Your presence was so welcome always encouraging;
Believing in our every effort, pushing to higher heights;
Touching mind with you, taught me greater depths.*



Down the Memory Lane . . .

ये लम्हे ये पल हम बरसों याद करेंगे।
ये मौसम बदल गये तो हम फरियाद करेंगे॥





संयुक्ता



*Down
the
Memory
Lane . . .*

. . . we will miss .you forever



Cyber Crime Prevention Tips for Women

Women are particularly susceptible to cyber crimes. There was a time when loafers used to make catcalls in public. Now a much larger number of people make different type of catcalls—electronic catcalls, that is, obscene emails, SMSes, MMSes, and phone calls. Once again it is the anonymity offered by electronic means of communication that people with a criminal bent of mind are encouraged into making obscene phone calls or sending obscene SMS/MMS to a woman. What makes cyber crimes so ubiquitous? The simple reason is that in this age, things like computers, cell phones, iPads, Internet, email, credit cards, and ATM cards are almost universally available with the common people. Hence there is every chance that some cyber criminal somewhere will find some way to commit a cyber crime of some type on you. Cyber criminals commit these crimes to get a perverse 'kick' out of it, even if they do not know your full identity. Hence you could be a student, a housewife, a schoolgirl,

a working woman, an ordinary businesswoman, a middle-class salaried employee, or a professional—all of you could easily become victims of cyber crime.

Follow these simple tips and you will save yourself a great deal of hassle.

Dos and Don'ts For Avoiding Becoming A Victim of Cyber Crimes On The Net

- Don't give out your email ID to everybody—it could land in the wrong hands and you could start getting obnoxious mails or spam.
- If you have to give your email ID at all, the proper method is to maintain two accounts. One must be a really personal account the ID of which you give only to very trusted people and friends. The other, an informal 'disposable' account on which you may receive mails from not-so-well-known people and casual acquaintances also, and which you may close any time without bothering about losing any important mail. You will, however, have to keep it running if you wish to take up the matter with the police.
- Be extremely wary of disclosing your real or important email ID anywhere on the Internet. Once again, if you have to—many sites send a confirmatory mail to an email account before you can activate some

services or take part in them—use the other 'disposable' ID for that purpose.

- There is no need to disclose your gender on the Net ever. Always make a fake identity for participating in various forums, blogs etc. The great advantage of the Net is that you can always conceal your true identity. Elsewhere in the world, women do not even take a phone connection with their full names—Marie Smith would take a phone as M. Smith, making it gender-neutral.
- Create accounts on sites that allow you to frequently change the answer to your 'secret question' and password.
- Do not use a password that also happens to be the answer to your secret question.
- Morphing is one of the most infamous ways to harass women. Morphing means editing a photo. You can take someone's head and attach it to somebody else's torso. If a criminal obtains a good soft copy of your photo, he could morph it



Dr. Anjali Nirmal
Chief Editor, Samyukta





संयुक्ता



into a pornographic image which could be posted on the Net to malign you. The key to prevent morphing is to ensure that no photo of 'personal' nature is ever posted on the Net including Facebook etc. social networking sites. Even otherwise, the photos you post on the Net must be of low quality in terms of their size in kilobytes. That would make it difficult for the criminal to morph them.

Avoiding Cyber Crimes Committed Through Mobile Phones

- Do not lend your mobile phone to casual acquaintances even for a few moments unless there is an emergency. This is a very old trick to get your number.
- When you pick up the phone and find a stranger calling who asks whether you are so-and-so person speaking, never admit it. He may even have the audacity of asking as to who are you. First ask as to who is calling. If you find him convincing, then ask why he called. If he is not able to convince, say 'wrong number' and disconnect immediately. If he asks whether your husband, brother or father is at home—never answer—simply disconnect. He may be trying to find to whether any male member is present or not. When you get such calls, the best thing is to hang up for a while—in most case, the caller would get tired after some time.

- Develop the habit of not responding to any call on your mobile that comes from a number that you have not stored in your phone's memory. You shall not miss on any important call. Rather, you will be saved from unwanted calls. No unknown person is going to call you and tell you that he is leaving a crore for you in his will. The situations that an incoming call would be important but the caller would be unknown to you are very low indeed. If the call is important, and the unknown caller had to tell you that your brother has been hit by a car, he could always send a SMS.
- Never respond to missed calls from strangers, that is, un-stored numbers. If the calls are persistent, switch off your phone for a while.
- Do not talk or chat unnecessarily to strangers online and never give out your phone number. You never know what might go wrong. The very next day, you would find your phone number posted on the Net declaring you to be available for sex for a thousand bucks only. You would be flooded with obscene calls. Talking to strangers over phone or on the Net in chat forums etc. is the beginning of most cyber crimes against women.

Things You Must Do If You Become A Victim Anyway

- Stop all communication with an offending ID the moment you receive an offending

mail because responding may only make it worse.

- If the offending thing is a SMS, do not delete it and inform the police immediately. Tracing mobile phone is much easier than tracing the computer from which an email was sent.
- You can, though it is not necessary, request the police officer to call that number from his official phone and warn him. Quite often, this step alone would deter him sufficiently. If the phone is found switched off except at odd hours, there is every reason to suspect that the man is indeed a crook and the police will have to proceed systematically.
- Close your 'disposable' email account if you think that the perpetrator could be a prankster. That would end the matter. Inform everyone on your address book to block your current address, and create a new email account.
- If you think that the matter is more serious than a prank or that the threat in the mail is serious, then keep the account running and inform the police.
- Do not hesitate to inform the police fearing that you would lose your reputation. Remember, worse things could happen if you do not inform the police. The police are legally bound to take action.

Where Parenting goes wrong

Most kids recognize the sign of McDonald's, KFC and Dominos long before they are speaking in full sentences. Why?

They are often raised on pizzas, fast-food burgers and orange soda, or if "raised" is a bit of a stretch, are taught that French fries, chicken fingers and soda is an acceptable meal. Junk foods are often eaten instead of regular food, an essential Indian diet like wholesome chapatis and vegetables or upmas and idlis.

Most of the times these junk foods contain colours that are laced with colours, those are often inedible, carcinogenic and harmful to the body. These foods and their colours can affect digestive systems, the effects of it emerging after many years. Studies have found that food colouring can cause hyperactivity and lapses of concentration in children.

Junk food not only has physiological effects, but also psychological ones - that affect the child's intellect and personalities. Poor nutritional habits can undermine these pre-requisites of learning, as well as saps the strength that children need for making friends, interacting with family, participating in sports and games or simply feeling good about themselves.

Not surprisingly eating junk food leads to a sense of starvation both physically and mentally,

as the feeling of satiation and contentment that comes after a wholesome meal is absent.

A Child's Taste Preferences are created by Age 3: Recent Study

When parents feed their preschool-aged children junk foods high in sugar, salt and unhealthy fats, it has a lasting impact on their taste preferences. All of the children tested in a research show preferences for junk foods, and all (even those who were just 3 years old!) are also able to recognize some soda, fast food and junk food brands.

Whose fault is it then? Absolutely not the kid's who has not even completed 5 years of his life.

There is simply no substitute for the feeling that descends, when you wake up and find that you are ready to take on the world and this primarily stems from good health. Instead of pampering your child with unhealthy food, try to customise your home food with some new innovations to make it appealing and more delicious. There is no better time than now to build a supportive environment for nurturing our children and endowing them with a legacy of good health.

Pratibha Rai

President RCWA, Imphal

Use non-stick cookware with care

When non-stick pans were introduced, everybody thought they were a godsend- you could cook with just a teaspoon of oil just like the doctor or dietician prescribed. But now we know better. The coating on your non stick Teflon pans is PTFE, a fluorocarbon based polymer known for its high resistance to solvents, acids and bases. But what you don't know is that when PTFE heats up, it releases toxic gases that have been linked to cancer, organ failure, reproductive damage and other harmful health problems.

So what's the solution?



Keep using your non-stick pans but don't heat it to a very high temperature. Use old fashioned utensils like cast iron pans or stainless steel. Opt for baking or steaming your food instead of cooking in a non-stick pan.

Pratibha Rai

President RCWA, Imphal



संयुक्ता



North-Eastern Zone Group Centre, Agartala



Ganapati Bappa Moraya : Ganesh Utsav



Holi Milan



Group Centre, Guwahati



Taking care of the aged : Senior Citizen Day



Senior Citizens' Day



CWA Raising DAY was marked with fun & gaiety



North-Eastern Zone Group Centre, Guwahati



Bacche man ke sacchhe : Children during a race organized in GC Guwahati



Doing our bit : Plantation drive on Environment Day



The Balancing Act : Women during a competition



Painting Competition by children



Lighting up their faces : Candle making class

Group Centre, Imphal



Swish and twist of colours : Cultural programme by kids of GC Imphal kept the audience spell-bound



संयुक्ता



North-Eastern Zone Group Centre, Imphal



CWA General Body Meeting



Beauty Parlour



World Aids Day



CWA Family Meeting



Cultural activity competitionw

North-Eastern Zone Group Centre, Imphal



Counselling of Seperated Family



CWA Raising Day Football



Cycle Race



Fancy Dress



International Day against Drug Abus



Glucoma Day



Flower Making



संयुक्ता



North-Eastern Zone Group Centre, Imphal



Taekwondo



International Family Day



Sangai Festival



Painting their Dreams : Children at a Painting Competition (above two)



World Hepatitis Day



Health is wealth : The CWA members were apprised of the benefits of good health



World Sight Day



North-Eastern Zone Group Centre, Imphal



A colourful presentation : Children presented mesmerizing cultural programmes during various occasions in the Group Centre

Holding the Flag High : Children during Independence Day celebrations



संयुक्ता



North-Eastern Zone Group Centre, Imphal



A manifestation of their imagination : During the painting competition, the latent talent of the kids oozed out in volumes



Prize distribution ceremony for winners of Painting Competition

Other Ranks' Day



Children during celebration of World Population Day

World Breast Feeding week

North-Eastern Zone Group Centre, Silchar



Enlightening their lives : Adult Literacy Day



Nutrition Week



Family Welfare Day



Nutrition Week



Scroll paintings by members of Regional CWA, Silchar

North-Eastern Zone Group Centre, Silchar



Swacchha Bharat Campaign



World Oral Day



CWA Raising Day



Fashion Show



Fancy Dress Competition conducted School Kids



Fashion Show

North-Eastern Zone Group Centre, Khatkhati



CWA Raising Day



Elegance personified-Smt Mini Jha, wife of Sh Kishore Jha, ADG at FWC



International Women Day



World Environment Day



Visit of Mini Jha



संयुक्ता



यात्रा के यादगार पल

मेरे पति का स्थानान्तरण दिल्ली से अगरतला हो गया। मैं अपने पति के साथ पहली बार सी.आर.पी.एफ. कैम्पस में रहने के लिए आयी थी, जिसके सुखद अनुभव को वर्णन करना चाहूंगी। पति के 15 वर्ष के सेवा काल में हमें कभी भी कैम्पस में रहने को नहीं मिला था इसलिए एक उत्सुकता भी थी कि कैम्पस की लाइफ कैसी होती होगी। हमने अगली छुट्टी में जाने के लिए कार्यक्रम तय किया। इस बीच मैंने लगभग सभी तैयारी कर ली थी। घर के सामान को रोड द्वारा भेज दिया था और अगले दिन हम ट्रेन से अपने नये बसेरे की तरफ चल दिए। यात्रा का पहला पड़ाव गुवाहाटी थी। गुवाहाटी में सी.आर.पी.एफ. के आवागमन शिविर में एक रात और एक दिन ठहरे। यहाँ हमारे रहने का अच्छा प्रबन्ध था। आवागमन शिविर में एक कमरा दिया गया जिसमें एक परिवार के रहने के लिए पूरा बंदोबस्त किया गया था। खाने के लिए मैस की भी अच्छी व्यवस्था थी। यहाँ से के.रि.पु.बल को बहुत करीब से पहली बार देखा और समझा कि बल के सदस्य अपना सभी कार्य बहुत उत्साह से और समय की पाबन्दी से करते हैं। अगले दिन हमें दिन में 2 बजे लामडिंग के लिए निकलना था। गुवाहाटी में कामाख्या का बहुत प्रसिद्ध मन्दिर है जिसे देखने का बहुत मन था इसलिए अगले दिन हम सुबह जल्दी उठकर मन्दिर के लिए निकल गये तथा दर्शन करके वापस लौट आये। बाद में खाना खाने के बाद हम लोग गुवाहाटी स्टेशन आ गये। जब हम स्टेशन के लिए रवाना हुए तो बीच-बीच में मेरे मन में घबराहट हुई और मन में विचार आता रहा कि अगरतला में सी.आर.पी.एफ. कैम्पस में मन लगेगा या नहीं और वहाँ रहने की व्यवस्था कैसी होगी। गुवाहाटी से चलने के 5 घंटे बाद लामडिंग पहुँच गये जहाँ रात 9 बजे अगरतला के लिए ट्रेन थी। ट्रेन लग चुकी थी

और हम ट्रेन में सवार हो गये। दिन भर की थकान के बाद कब आँख लगी पता ही नहीं चला सुबह जब आँख खुली तो देखा कोई स्टेशन है। खिडकी से बाहर देखने पर पता चला कि हाफलोंग स्टेशन है। स्टेशन का नाम बड़ा अजीब था लेकिन यहाँ का मनोरम दृश्य देखकर दिल और दिमाग ताजा हो गये। सुबह का नजारा बिल्कुल किसी सुन्दर हिल स्टेशन की तरह था। यह ऊँची पहाडियों पर बसा हुआ है। इन पहाड़ों पर सफेद बादल छाये हुए थे। जब यह बादल छँटे तो प्राकृतिक दृश्य और भी मनमोहन हो गया। वहाँ से चलने के बाद आगे देखा कि पहाड़ों में कई झरने और हरे-हरे वृक्षों की कतार तथा बाँस के झुरमुट देखकर ऐसा लगता है जैसे प्रकृति शांति प्रदान कर रही हो। यह दृश्य देखकर तो कोई भी मंत्रमुग्ध हो जाएगा। रास्ते भर ऐसे ही सुन्दर नजारे, लम्बी-लम्बी सुरंग और चाय के सुन्दर बागान भी देखने को मिले।

शाम को 5 बजे हम अगरतला पहुँच चुके थे। कुछ समय बाद गाडी से हम ग्रुप केन्द्र सी.आर.पी.एफ. कैम्पस में पहुँच गये। गाडी टाइप-3 क्वार्टर के पास रुक चुकी थी। नीचे उतर कर देखा एक सुन्दर सी पहाड़ी में क्वार्टर बने हुए थे। यहाँ से लगभग पूरे कैम्पस का नजारा दिख रहा था। रहने के क्वार्टर को देखा तो मन खुश हो गया। इसमें दो बैडरूम, और एक ड्राइंग रूम, किचन, टायलेट और बाथरूम था। जिसमें सुन्दर टाईल्स लगी हुई थी। सुबह मैं कैम्प के अन्दर घूमने गयी तो देखा यहाँ पर कैम्पस के अन्दर एस.टी.डी. और रेल/हवाई जहाज टिकट बुकिंग की सुविधा थी। अन्दर एक अस्पताल, बड़ा-सा सभा कक्ष और कैण्टीन भी थी जिसमें जरूरत का सभी सामान उपलब्ध था। ग्रुप केन्द्र की तरफ से

बीच-बीच में माताबारी मन्दिर और अन्य जगह घूमने व पिकनिक के लिए भी व्यवस्था की जाती है। यहाँ पर समय-समय पर रीजनल कावा द्वारा फेमिली वेलफेयर का कार्यक्रम भी होता है। कोई समस्या होने पर हमें अच्छा सुझाव दिया जाता है। इसके साथ ही हमें रोग से बचने के उपाय, बच्चों की देखभाल करने और पड़ोसी के साथ मिलजुल कर रहने तथा नैतिक जीवन की शिक्षा के बारे में भी बताया जाता है। इतनी सारी सुविधाएँ हम लोगों को दी गई हैं। यहाँ रहते हुए ऐसा महसूस होता है कि हम लोग यहाँ घूमने-फिरने के लिए आए हैं। यह सब देखकर मुझे यह स्थान बहुत पसंद आया। यहाँ रहते हुए कब दो साल बीत गये पता ही नहीं चला। यहाँ पर लगभग 200 परिवार रहते हैं। हम सभी एक दूसरे के पड़ोसी परिवार हैं और एक शहर अथवा गाँव की तरह रहते हैं।

यहाँ से जाने के नाम पर मेरा मन कभी तैयार नहीं होगा, लेकिन एक ना एक दिन मुझे यहाँ से जाना ही पड़ेगा। मैं यहाँ से एक चीज जरूर चुराकर ले जाऊँगी, वह है, यहाँ के प्राकृतिक दृश्यों की यादें जिन्हें मैं अपनी तन्हाई और फुरसत के समय में देखा करूँगी और जीवन भर साथ रखूँगी। मुझे गर्व है कि ग्रुप केन्द्र अगरतला में रहने वाले परिवारों को इतनी सारी सुविधाएँ सी.आर.पी.एफ. द्वारा दी जाती है। मैं इसके लिए ग्रुप केन्द्र अगरतला को तहेदिल से धन्यवाद देती हूँ।



श्रीमती दया जोशी



संयुक्ता



Challenges Faced by the Adolescents in Today's Society

Human life completes its journey through various stages and one of the most vital stage is adolescence. Adolescence is the period of transition from childhood to adulthood and plays a decisive role in the information of prosocial/ antisocial adult

All of us undergo this stage which poses many challenges and is full of excitement.

Adolescence is a period of transition when an individual changes-physically and psychologically-from a child to an adult.

Adolescents, due to these changes often face a number of crises and dilemmas. It is the period when the child moves from dependency to autonomy. It demands significant adjustment to the physical and social changes.

The adolescence period in the Indian social system comes under **Brahmacharya (apprenticeship)**. This is the first ashram (stage of life) of developmental stages.

Psychologically, adolescence is such a vulnerable stage that boys/girls of this age are easily carried away by perceptions generated by:-

- Misleading and misguiding parents, teachers, friends, brother/sisters.
- Ignorance of elders.
- Half-informed or ill - informed friends, brothers, sisters.
- Wrongful messages depicted through TV serials, advertisements, films etc.
- Publications carrying partially or fully false information.

Every adolescent boy or girl is prone to such exposures - which ultimately are retained as perceptions in their minds to form their behavioural patterns.

Most common problems faced by adolescence are:-

- i) **Emotional tension:** Self respect and personal pride make the individual emotionally bad. He expects the things to be done as he aspires.
- ii) **Personal appearance:** The adolescent is much worried about the appearance with modern and latest life style at any cost.
- iii) **Emancipation:** It is the ambition for freedom from parental sovereignty. The individual hates control of the parents..
- iv) **Economic independence:** Money from parents for personal expense is a major problem.

Despite all efforts being made by parents and teachers, large number of adolescents face one or many problems. When the problem is aggravated, the parents may take them to doctors. But most of them face minor problems-modifying their behavioural patterns, personality as a whole.

Remedies

Although there is no tested formula to solve these problems of the adolescents yet, we can tackle some of them by modifying our behaviour, outlook, and by developing friendly relations with them.

- It is important to clear all their misconceptions about society, love, laws, relationships, etc.
- Many of the wrong perception about sex

Dr. (Mrs.) Shivani Chauhan

related problems need to be cleared by a well informed person.

- When teachers, parents, brothers/sisters or any close person has positive dominant personality to effectively guide the adolescent at right time, they turn out to be very useful section of future population.
- Their imaginary fear, imaginary anxieties and unrealistic expectations as well as host of strong misconceptions also needs to be addressed.
- Adolescents being influenced by mass media like electronic media, print media or computer culture-may be guided or misguided by such exposure. When misguided-they are likely to develop negative perception about many social values.
- The social implications of adolescent problems are dependent upon social structure. In a country like India-where family ties are strong, due to emotional, financial, religious attachments-the gravity of implications are less.
- Participatory techniques such as role plays, street plays, folk dances, music, puppetry, posters, exhibition, slogan writing, etc. could be used extensively to clear all their misconceptions.



संयुक्ता



Jammu & Kashmir Zone

"Water, water everywhere, not a drop to drink..."

This is probably what the residents of Srinagar sighed in the recent unprecedented floods that inundated the city. Waking up to utter shock and disbelief, they found out, one fine morning, that the city had begun to submerge. When the state machinery was incapable to help the residents, the armed forces rose to the occasion and not only rescued people from the labyrinth bylanes of the city, but also provided them with food, water & shelter.w

CWA also marched shoulder to shoulder with the Armed Forces and provided succour to the citizens. As clean drinking water was the first casualty in the floods, Regional CWA, Srinagar distributed a number of water filters to the residents.



Group Centre, Gandhinagar



Lemon Race in GC Gandhinagar



Mahilas Playing Volleyball

Jammu & Kashmir Zone

Group Centre, Gurgaon



Ladies Training Programme by CWA

Group Centre, Gwalior



Plantation Programme



Knowledge of Safe Driving



Health Check up



CWA Picnic at Sphurti



Children Day Celebration

नारी



श्रीमती सुषमा देवी

मैं नारी हूँ नये दौर की,
न कमजोर मुझे समझना,
है हिम्मत आसमां चूमने की,
ना कमजोर मुझे समझना। मैं नारी हूँ

है चाह मेरी ऊँची उड़ान की
है अभिलाषा मुकम्मल पहचान की
वो पहिचान में बनाऊंगी,
ना कमजोर मुझे समझना, मैं नारी हूँ

है हौसला तूफानों से टकराने का है
जोश दुनिया से टकराने का
मैं नारी हूँ नये दौर की,
ना कमजोर मुझे समझना, मैं नारी हूँ



संयुक्ता



Jammu & Kashmir Zone

Group Centre, Bantalab

Painting competition organized in GC Bantalab



Master Sansar Chand Baru Memorial Trust and CRPF Family Welfare Association(CWA), organised a painting competition at Group Centre Bantalab, headquarters' auditorium here today.

Director Floriculture, Jammu K K Sharma was the chief guest, senior artists N D Jamwal as guest of honour and Mrs Rozy Dhar, wife of Sh Kuleep Dhar, IGP CRPF, the regional president of CRPF Family Welfare Association (Sanrakshi), presided over the function.

About 78 children from KV Bantalab and Gandhinagar, Viraj School for street children Nagrota and children from CRPF Camp participated in the painting contest on the theme- 'Save Environment, Save Earth'.

Children's Taekwondo team of GC Bantalab wins title

Kids from GC Bantalab participated in the '5th Open J&K State Taekwondo Championship 2014' and '16th J&K State (Seniors) Kyorugi/ Poomsae Taekwondo Championship 2014' organised by Jammu and Kashmir Taekwondo Association at Jammu.

Out of the total 2300 participants from all J&K state, the GC team turned up with only 16 participants in sub junior and junior categories. All the kids fought with extreme abilities & zeal and surprised one and all by bagging 07 Gold, 02 Silvers and 06 Bronze medals, winning the BEST SPORTSMANSHIP'S TROPHY.



My New Best Friend



Sreya Raveenalram

Today I met a great new friend
who knew me right away
It was funny how she understood
All I had to say

She listened to my problems
She listened to my dreams
We talked about love and life
She'd been here too it seems

I never once felt judged by her
She knew just how I felt
She seemed to just accept me
And all the problems I'd dealt

She didn't interrupt me
Or need to have her say
She just listened very attentively
and didn't go away.

I wanted for to understand
how much this meant to me
But as I went to hug her
Something started me.

I put my arms in front of me
And went to pull her nearer
And realized that my new best friend
was nothing but a mirror.

HONESTY



Neha Nambiar

Class IIIrd A
C.R.P.F. Pallipuram

Honesty is the best policy' is a very famous proverb. We have heard this many times. But have understood its real meaning? What does it really mean? To be honest means to be open and true to others. One of our great leaders taught us to be honest. Do you know who he is yes it was Mahatma Gandhi, the Father of our Nation. From the childhood he wanted to be honest to what he does.

When Gandhiji was a child he got a chance to copy answers from others one's book. Even his teacher asked him to copy. But he was not ready to do any cheating. The reason was that he always wanted to be honest.

Some people think that it is a shame to be honest. It is because they fear that others will laugh at them. But it is only a misunderstanding. Let us look into the history. Those who are honest and true are always remembered. Even after generations they are respected so there is nothing to be shameful in being honest.

ये क्या हो गया

ये क्या हो गया किस विपदा में खो गया,
जो कभी स्वर्ग छुआ करता था
किस बेबसी में आज आज डूब गया।
हा-हाकार मचा है हार गली, मुहल्ले में,
ये क्या

एक सहायता के लिए देखती आखें चारों ओर,
दुख की घटा छा गयी चारों ओर,
ये क्या

यही देख यही सोच कर उठ जाती है रातों में
सर्द पड़ा है, दूर खड़ा है, चौराहा बेनूर हो गया,
ये क्या

जिनके घर महफिल जमती थी,
आज खड़े हैं हाथ पसारे,
सहमा-सहमा राम यहाँ पर
आहट से रहमान डर गया।
ये क्या

यही दुआएं यही प्रार्थना हम करते हैं,
वही किलकारी, वही रोशनी
फिर से उनके आंगन में गूँजे।

तनूजा भण्डारी

दो 'आमों' की 'खास' यात्रा

बात इन्हीं गर्मियों की है, जिसकी धधक हम लोग अभी भी भुगत रहे हैं। हिन्दु धर्म में यह प्रथा है कि अपना एक प्रिय फल हर साल अपने पूर्वजों को अर्पित करते हैं। मेरी माँ, जो काशी में रहती हैं, ने मुझे आदेश किया कि पहले तुम दो 'आम' किसी गरीब आदमी को दान कर देना, उसके बाद ही आम खाना शुरू करना। कर्मकाण्डीय आड़म्बर का तो तुम्हारे पास समय नहीं है।



तमाल सान्याल
जनसंपर्क शाखा
महानिदेशालय

आज्ञानुसार, मैं दो आम लेकर अपने घर (यमुनापार) से मायापुरी को चला। रास्ते में मेरी निगाहें टकटकी लगाकर किसी गरीब आदमी की तलाश करने लगी। परन्तु कोई भी ऐसा नज़र नहीं आया, जिसे मैं ये दो आम देकर उसकी नज़र में सन्तुष्टि व धन्यवाद तलाशता व अपने पूर्वजों का कृपापात्र बनता। वापसी से भी यही सिलसिला रहा। हारकर पूर्वजों का कोपभाजन बनने से बचने के लिए मैंने वह दोनों आम हमारे घर में काम करने वाली पुष्पा को दे दिए। पर मन में एक कसक सी रह गई कि वह तो पूरी तरह 'गरीब' नहीं है क्योंकि उसके पास अपना मकान है (जो मेरे पास भी नहीं है)।

दो 'आमों' की इस 70 किमी. की 'खास' यात्रा के बारे में बाद में मनन करने पर मुझे यह 'दुर्लभ ज्ञान' प्राप्त हुआ कि शायद इस शहर में कोई आदमी 'आम' नहीं है, हर कोई 'खास' है। मैं समझ गया कि देश के 'अच्छे दिन' अब दूर नहीं हैं।

कर भला तो हो भला

एक बार एक लड़का अपने स्कूल की फीस भरने के लिए एक घर से दूसरे घर सामान बेचा करता था।

एक दिन उसका कोई सामान नहीं बिका और उसे बड़े जोर से भूख भी लग रही थी।

उसने तय किया कि अब वह जिस भी घर जाएगा, उससे खाना माँग लेगा।

दरवाजा खटखटाते ही एक लड़की ने दरवाजा खोला, उसे देखकर लड़के ने, लिहाज में खाने की जगह पानी का एक गिलास मांगा।

लड़की ने भाँप लिया था कि वह भूखा है, इसलिए वह एक बड़ा गिलास दूध का ले आयी। लड़के ने धीरे-धीरे दूध पी लिया।

कितने पैसे दूँ। "लड़के ने पूछा?"

लड़की ने जवाब में कहा,

"माँ ने मुझे सिखाया है कि जब भी किसी की मदद करो तो उसके पैसे नहीं लेने चाहिए"।

"तो फिर मैं आपको दिल से धन्यवाद देता हूँ।" लड़के ने कहा।

सालों बाद वह लड़की गंभीर रूप से बीमार पड़ गयी। डाक्टर ने उसे बाहर के बड़े अस्पताल में दलाज के लिए भेज दिया।

विशेषज्ञ डाक्टर को मरीज देखने के लिए बुलाया गया। जैसे ही डाक्टर ने लड़की के कर्बे का नाम सुना वह एकदम से उठा, उस लड़की के कमरे में गया और उसे तुरन्त पहचान लिया। डाक्टर ने तय किया कि लड़की की जान बचाने के एड़ी चोटी एक कर देगा। और उस लड़की की जान बच गयी। डाक्टर ने अस्पताल के कार्यालय में जाकर लड़की के इलाज का बिल लिया, बिल के कोने में एक नोट लिखा और लड़की के पास भिजवा दिया। लड़की ने बिल खोला, अचानक उसके नजर बिल के कोने में खिे नोट पर गयी, जहाँ लिखा था, "एक गिलास दूध द्वारा इस बिल का भुगतान किया जा चुका है"। नीचे डाक्टर के हस्ताक्षर थे। खुशी और आश्चर्य से लड़की के आँखों से आँसू छलक पड़े।

समीक्षा, क्लास VIII



संयुक्ता



Rapid Action Force 100 RAF, Ahmedabad



Blood Donation Camp by 100 Bn, RAF



Independence Day Celebrated at FWC



Musical Chair in CWA Programme



My Earth My Duty in FWC 100 Bn



Sawan Teej Festival in 100 Bn, RAF



Mehndi Competitions at CWA Day 100 Bn



Plantations on Project Janani Celebrated



CRPF Raising Day 100 Bn



Workshop in Montessori School 100 Bn, RAF



संयुक्ता



Rapid Action Force

103 RAF, New Delhi



Cultural Programs



Making of Lemon Pickle by FWC Members at FWC 103 Bn RAF



Musical Chair on the Occasion of International Family Day

105 RAF, Coimbatore



Lecture Asthama Day



Tree Plantation



Tree Plantation



CWA Meeting



Montessori School



Embroidery Course

Rapid Action Force 105 RAF, Coimbatore



Cooking Course



Candle Making

107 RAF, Bhopal



Children's Day



Midas touch – A woman getting beauty treatment at CWA beauty parlour



Self Defence for Girls



Children's Day



Stitcing ties – Ladies at stitching course



Not a tailored one - CWA women learning tricks of tailoring



संयुक्ता



नारी का सम्मान करें

सम्पूर्ण विश्व में शायद भारत एक मात्र ऐसा देश होगा जहाँ दुर्गा, काली, सरस्वती, गौरी की उपासना की जाती है। जहाँ भू देवी श्री रेवी, विद्यादेवी, महिषासमूर्दिनी, अम्बा, वैष्णोदेवी, नंदा देवी, मनसा देवी, ज्वाला देवी, जाने कितने ही अवतार रूपों में देवी की अर्चना, वंदना, स्तुति की जाती है। पौराणिक कथाओं में शिव शक्ति के बिना 'शव' हैं। तो राम सीता के वियोग में वन-वन भटकते रहे, अनुसूया, द्रोपती, अहिल्या, तारा, गार्गी, लीलावती से लेकर लक्ष्मीबाई तक सबकी कथाएँ हमारे हिन्दू परिवारों में कढ़स्य हैं फिर क्या कारण है कि देवी की पूजा करने वाले देश में सड़कों पर दफ्तर में, बाजार में, यहाँ तक कि घर में भी देवियाँ सुरक्षित नहीं हैं। क्या हमारा सभ्य समाज फिर से असभ्यता के समय की ओर चल रहा है। वैदिक युग में पुरुष और नारी के बीच आइडेंटिटी नहीं इक्वालिटी यानि ऐसा तांदातम्य स्थापित था जिसमें बराबरी और समानता थी। बात अधिकारों की नहीं कर्तव्यों को बाँटने की थी। शिव का अर्धनारिश्चर स्वरूप यही दर्शाता है कि पुरुष नारी के बिना अधूरा है।

मनुस्मृति के अनुसार गुरु को पिता का दस गुना आदर मिलता है, पिता को सौ गुना, और माँ को हजार गुना, क्योंकि माँ प्रथम शिक्षक होती है। भारत में 'मातृ देवो भव, माँ, पत्नी को देवी कहा गया है। "यत्र नार्यस्त पूजयन्ते श्मन्ते तत्र देवता" यानि जहाँ नारी की पूजा (आदर-सम्मान) होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। कहा गया है कि नारी का सम्मान पति, भाई, पति सभी करें

यदि वे अपना कल्याण चाहते हैं। जहाँ नारी प्रसन्न नहीं, वहाँ स्मृद्धि, खुशहाली कभी नहीं आती। वैदिक काल में बालक बालिका दोनों का उपनयन संस्कार किया जाता था, दोनों के लिए शिक्षा अनिवार्य थी।

फिर आया मुस्लिम, विदेशी हमलों का आक्रामक युग जहाँ लूट, हत्या नर संहार बलात्कार आए दिन के घटनाक्रम बने, हर हमले के साथ कत्लेआम होने लगा। बुद्ध और महावीर जगत को शान्ति और अहिंसा सिखा कर गये ही थे कि फिर गजनी तुगलक, लोधी, ऐवक आदि ने भारत की जमीन पर राज करते रहे जिनकी नजर में औरत बराबरी की नहीं सिर्फ भोग की वस्तु मात्र थी। इसलिए यहाँ परदा प्रथा ताकि घरों की स्त्रियों को हमलावरों से बचाया जा सके। इसी समय सती प्रथा भी प्रचलित हुई जहाँ आत्मसम्मान बचाने के लिए स्त्रियाँ जौहर कर लेती थी, मुगलों के बाद आए अंग्रेज और सदियों की गुलामी के कारण भारत बेटियों से घृणा करने वाला देश बन गया।

अब हालात ये हैं कि आजाद देश में स्त्रियाँ गुलाम ही हैं, देवी की पूजा करने वाला देश कन्या के गर्भ में आते ही उसकी हत्या कर देता है। क्या देवी मन्दिरों के लिए है और पुत्र वंश चलाने के लिए?

माँ प्रथम शिक्षक है और अपने बेटे को वही उचित संस्कार दे सकती है। गली-मौहल्ले सड़क, बस, जहाँ भी लड़के-लड़कियों से छेड़छाड़ करते हैं, परेशान करते

हैं। वह सब किसकी जिम्मेदारी है?

हाँ समाज बदला है, हर युग में बदलता है, स्त्रियाँ घरों से बाहर निकल पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं, काम कर रही हैं, घर को आर्थिक योगदान दे रही हैं पर कड़वा सच यह भी है कि परिवार बिखर रहे हैं। दिनभर की थकी हारी महिला दफ्तर में खट कर घर लौटती है। फिर भी मानसिकता वही रह गयी है। घर की महिला ही खाना बनाएगी। संयुक्त परिवार बिखर गये हैं जहाँ दादा-दादी से कहानियाँ सुनकर बच्चे बड़े होते थे, वही आज बच्चे टी.वी. देखकर, नौकरानी, आया तक सीमित रह गये हैं। ये दायित्व भी स्त्री के कन्धों पर ही है। समय आ गया है कि नारी अबला नहीं सबला का रूप ले और यह आन्दोलन घर-घर से शुरू हो। स्त्री हर स्त्री संभाले अपने पति को भाई को बेटे को और बनाए अपनी बहन, बेटा, बहू को सक्षम और समर्थ। तभी आएगी सामाजिक क्रान्ति जब बदलेगी पुरुष की सोच। जिस नन्हे, मुन्ने शिशु को गोद में सहलाया पुचकारा तो उसे यह शिक्षा देने की नैतिक जिम्मेदारी माता पिता की है। ताकि बड़ा होकर लाड़ला जिम्मेदार, पुरुष बने सम्मान करना सीखे।



तनुजा भण्डारी

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) - महिला सशक्तिकरण का साधन

भारतीय समाज महिलाओं की प्रतिष्ठा और उनके अधिकारों को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान करता है। धन एवं समृद्धि के लिए देवी लक्ष्मी, शिक्षा एवं ज्ञान के लिए देवी सरस्वती और शक्ति के लिए देवी दुर्गा के प्रतीकों का प्रयोग महिलाओं के प्रति हमारे विचारों को प्रतिबिंबित करता है। विद्वानों के अनुसार प्राचीन भारत में जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं को पुरुषों के समान प्रतिष्ठा प्राप्त थी। प्राचीन भारतीय पतांजलि और कात्यायन के साहित्य से यह मालूम होता है कि प्राचीन वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षित कराया जाता था। ऋग्वेद के श्लोकों के अनुसार लड़कियों की शादी परिपक्व अवस्था में की जाती थी और संभवतः वह अपने पति का चयन करने के लिए स्वतंत्र थी। यह हमारा इतिहास था। परन्तु पिछली कुछ सदियों से महिलाओं की स्थिति में गिरावट आनी शुरू हो गई है। विद्वानों और शिक्षार्थियों का यह मत है कि इस स्थिति में सुधारमहिलाओं को उचित शिक्षा देकर ही किया जा सकता है। सरकार द्वारा महिलाओं की शिक्षा और कल्याण के लिए अनेक योजनाएं बनाई गई हैं। परन्तु इसके बावजूद भी पुरुषों और महिलाओं के शैक्षणिक स्तर में अंतर विद्यमान है। इस अंतर को तभी दूर किया जा सकता है यदि हम महिलाओं का उचित सशक्तिकरण करें।

महिला सशक्तिकरण एक ज्वलंत विषय है जिसके बारे में विश्व भर में चर्चा जारी है। चाहे यह राजनीतिक, सांस्कृतिक मंच पर या अन्य किसी मीडिया के मंच



पर हो। विकासशील देशों में महिलाएं अपने आपको सबसे अधिक निम्नतर स्तर पर पाती हैं। महिलाओं का सशक्तिकरण कैसे किया जा सकता है? समाज के किस वर्ग का सशक्तिकरण किया जाना आवश्यक है? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं, जो ऐसी चर्चाओं में उभरकर सामने आते हैं। विभिन्न क्षेत्रों के अंतर्गत, विशेषकर सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार के क्षेत्र में महिलाओं का सशक्तिकरण करने से हम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु तेजी से अधिकतम उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के क्षेत्र एवं आई.सी.टी. का विकास होने के परिणामस्वरूप सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार ने विश्व स्तर पर समाज में क्रांति ला

दी है। सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार आर्थिक विकास के साथ-साथ वर्ग, रंगभेद एवं लिंग में समानता को बढ़ावा देने हेतु एक आवश्यक साधन है। यह सामाजिक एवं आर्थिक असमानता को कम करने एवं स्थायी सम्पदा का विकास करने हेतु अनेक अवसर उपलब्ध कराता है।



अनीता कुमारी

पूरा विश्व ज्ञान केन्द्रों से जुड़ा हुआ है और शिक्षित वर्ग इन केन्द्रों की सहायता से अपना ज्ञान अर्जन कर रहे हैं। संचार सूचनाओं के आदान-प्रदान में प्रभावशाली रूप से सुधार लाकर आई.सी.टी. द्वारा शक्तिशाली सामाजिक नेटवर्क विकसित करके उन्नति के मार्ग पर भारी सफलता दे सकता है।





पुरुष अथवा महिलाओं के किसी भेद-भाव के बिना, आई.सी.टी. की क्रांतिकारी खोज का इस्तेमाल करके स्कूल एवं कालेजों और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे सभी छात्र अपने स्तर के द्वारा ज्ञान हासिल कर सकते हैं। इनके अलावा घर में रहने वाली महिलाएं, जिन्हें कभी गृहणियां कहा जाता था उन्हें अब आदरपूर्वक होम मेकर कहा जाता है वे चाहे शिक्षित हों या अशिक्षित, दोनों की और सबसे महत्वपूर्ण तबका ग्रामीण पृष्ठीभूमि की स्वरोजगारी महिलाएं हैं।

आई.सी.टी. की जानकार महिलाएं, पुरुषों के समान आरामदायक व आत्मविश्वास से जीवनयापन कर सकती हैं। ऐसी कई संगठन हैं जो महिलाओं को आई.सी.टी. में प्रशिक्षित करके घरेलू उत्पाद तैयार करने में उनका सहयोग कर उन्हें स्वरोजगारी ग्रामीण महिलाएं बना रहे हैं। सेवा (SEWA) सेल्फ एम्प्लायमेंट वूमेन एसोसिएशन, अहमदाबाद, हरवा (HARWA) अपनी तरह का पहला महिला-केवल ग्रामीण बीपीओ (हरियाणा) आदि संस्थाओं

की गतिविधियों ने सूचना-प्रौद्योगिकी आधारित माध्यमों को शुरू करके ग्रामीण गरीबी व निरक्षरता के बीच प्रौद्योगिकी की खाई को पाटने की चुनौतियों का सामना करने में सफलता प्राप्त की है जिससे डिजिटल दूरियां कम होंगी।

ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के जीवनयापन में आईसीटी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण लाने में महिलाओं को आईसीटी की जानकारी में प्रशिक्षित करने का कोई बड़ा कार्य नहीं रहेगा। आई.सी.टी. में ही प्रशिक्षित होना उनके लिए कई तरह से लाभदायक हो सकता है:-

- इंटरनेट के माध्यम से वे दैनिक आवश्यकताओं जैसे-स्वास्थ्य, मनोरंजन, खानपान, फैशन डिजाईनिंग, अध्ययन सामग्री आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकती हैं तथा उत्पादों का तुलनात्मक विश्लेषण करके उनकी खरीददारी और उनके बारे में जानकारी प्राप्त कर अपनी शंकाएं दूर कर सकती हैं।
- इंटरनेट बैंकिंग व हवाई, व्यापार, रेल टिकट बुकिंग आदि सीखकर वे इनसे अपने जीवनसाथी के कार्य को हल्का कर सकती हैं। आज टिकट बुकिंग, फीस भुगतान, बिजली-पानी व कर भुगतान आदि इंटरनेट द्वारा केवल एक क्लिक पर उपलब्ध हैं।
- ई-कॉमर्स:- विभिन्न कार्य जैसे जी2सी (सरकार से नागरिक की सेवाएं ई-बर्थ प्रमाणपत्र, ई-लैण्ड, ई-नेटिवीटी प्रमाणपत्र आदि), बी2सी (उपभोक्ता सेवाएं जैसे मोबाईल रिचार्ज,

ऑनलाइन किस्त भुगतान आदि नागरिक से सरकार, ऑनलाइन शिकायतें, सुझाव आदि दर्ज करना ऐसे प्लेटफार्म हैं जहां सभी इन सुविधाओं का आसानी से पारंपरिक/मैनुअल प्रणाली की खामियों से सामना किए बिना उपयोग किया जा सकता है।

- **विश्व एक वैदिक गाँव:-** सूचना संचार प्रौद्योगिकी ने विश्व को एक वैश्विक गाँव में बदल दिया है। इंटरनेट सुविधाएं जैसे ई-मेल, चैट, वीडियो चैट, सोशल नेटवर्किंग सिस्टम आदि ने वास्तव में भौगोलिक विभाजन को दूर कर दिया था। आज एक बूढ़ी महिला भारत के दूरस्थ गाँव से अमेरिका में अपने पोते एवं ऑस्ट्रेलिया में अपनी पोती ऐ एक ही समय में आमने-सामने चैट कर सकती है।



- आज इंटरनेट ज्ञान का सबसे बड़ा केन्द्र बन गया है। इस मीडिया का प्रयोग न केवल सूचना

प्राप्त करने के लिए बल्कि विषयों को सीखने में भी किया जा सकता है। कई वेबसाइट जैसे “खान अकेडमी”, कोरसी आदि विभिन्न पहलुओं पर निःशुल्क शिक्षा प्रदान करती हैं। नेट में दोनों तकनीकी/सूचना प्रौद्योगिकी और गैर तकनीकी विषयों पर निःशुल्क ऑनलाइन ट्यूटोरियल भी आसानी से उपलब्ध हैं।

यहाँ काफी अवसर हैं जहाँ कोई भी व्यक्ति ऑनलाइन काम कर सकता है और चिकित्सा प्रतिलेखन, ऑनलाइन डाटा एंट्री आदि करके तदनुसार कमाई भी कर सकता है।

उपर्युक्त दर्शाए गए विकल्प केवल कुछ उदाहरण स्वरूप हैं। आज इंटरनेट एक ऐसा मंच है, जहाँ सभी

तरह के व्यक्तियों के लिए अनंत अवसर एवं मार्ग उपलब्ध है। हाँ यह व्यक्ति विशेष की योग्यता एवं नजरिये पर निर्भर करता है कि वह सही मार्ग अथवा सही विकल्प का चयन करें। इसलिए प्रत्येक उस महिला के लिए बुनियादी साक्षरता एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता है जो इस अद्भुत उपकरण की जानकारी प्राप्त करने जा रही है।

- **घर बैठे कमाएं:-** इंटरनेट की दुनिया में आज

इंटरनेट में महिलाओं के लिए “करो” एवं “मत करो” संबंधी मार्ग-दर्शन

“करो”

- विशेषकर उन्हें पक्का पासवर्ड प्रयोग में लाना चाहिए जो वित्तीय एवं व्यक्तिगत लेनदेन करती हैं। अलग साइट के लिए अलग पासवर्ड का प्रयोग करें।
- बच्चों के लिए इंटरनेट के प्रयोग की सीमाएं तय करें।
- अपनी व्यक्तिगत सूचना के प्रति सावधानी बरतें। जरूरत के अनुसार ही सूचना को साँझा किया जाना चाहिए।
- इंटरनेट पर अन्य उपयोगकर्ताओं की निजता का सम्मान करें।
- इंटरनेट से प्रोग्राम (“डाउनलोड”) कॉपी करते समय सावधानी बरतें।
- सटीकता एवं वैधता के लिए साइट का मूल्यांकन करना सीखें। इनमें से कई तो केवल बेचने हेतु बने होते हैं।
- सम्भाव्य ऑनलाइन उत्पीड़न एवं गलत बयानबाजी के प्रति बच्चों को सचेत करें।
- उचित वायरस रोधी साधनों से अपने पीसी को सुरक्षित रखें।
- केवल सुरक्षित साइट से ही ऑनलाइन खरीददारी करें।
- पॉप-अप को नजरअंदाज करें।
- द्विचरणीय सत्यापन को इनेबल करें।

“मत करो”

- किसी को भी अपना पासवर्ड न बताएं
- इंटरनेट पर मिले किसी भी अनजान व्यक्ति से मिलने की कोशिश न करें।
- किसी भी ‘अनाधिकृत सामग्री’ की कॉपी न करें।
- किसी भी सूचना को अधिक साँझा न करें, विशेषकर व्यक्तिगत प्रकृति की सूचना को।
- यह मत भूलें कि लोगों में हंसी-मजाक की अलग-अलग भावना होती है। आप जो हास्यजनक महसूस करती हैं वह अन्य के लिए रुचिकर न हो।
- किसी भी ऐसी सूचना को प्रसारित न करें जब तक कि उनकी सत्यता सिद्ध न हो जाए।
- इंटरनेट पर किसी भी प्रकार की गैरकानूनी गतिविधियों में शामिल न हों।
- किसी भी अवांछित, भड़काने वाले लिंको तथा साइटों को क्लिक न करें।
- अवांछित लिंक एवं साइट में व्यक्तिगत जानकारी (प्रत्यय पत्र) को साँझा न करें।
- यह मत भूलें कि जो इंटरनेट पर दिखाई दे रहा है वह हकीकत में ना भी हो सकता है।
- अजनबियों द्वारा ठगे जाने से बचें जो ये कहते हैं कि वे तुम्हें जानते हैं।
- किसी भी ऐसे अटैचमेंट अथवा लिंक को मत खोलें जिसकी आप अपेक्षा कर रहे हैं लेकिन उसके मिलने की उम्मीद नहीं है।



संयुक्ता



Training Centre CTC T & IT, Ranchi



A hearty affair : World heart day



A visit to the Montessori school



Divine couples : Janmashtami celebrations



Children' volleyball



With Montessori school children



Mehandi competition



संयुक्ता



Spring

Spring, Spring, Spring,
It makes me want to sing.
As flowers grow,
It's quite a show-
Spring, Spring, Spring.

Sonali Raj
D/o Dr. Manoj Kumar
Age 8 Years

The Pancake

Mix a pancake,
Stir a pancake,
Pop it in the pan.
Fry the pancake,
Catch it if you can.

Sonali Raj
D/o Dr. Manoj Kumar
Age 8 Years

Gift of God

I am a gift of God to my mother.
She loves me and given me everything
That I want
She took me in her hands,
When I was small
And kissed me
For I am the gift of God to my mother
And you too.

Sonali Raj
D/o Dr. Manoj Kumar
Age 8 Years

A Silly Bird

The Ostrich is a Silly bird
With scareely any mind.
It often runs so fast.
He leaves himself behind.

Sonali Raj
D/o Dr. Manoj Kumar
Age 8 Years

Cocks Crow in the Morn

Cocks Crow in the morn
To tell is to rise
And he who lies late
Will never be wise.
For early to bed
And early to rise
Makes a man healthy,
Wealthy and Wise.

Saurav Raj
S/o Dr. Manoj Kumar
Class-II Sec-E
Age-6 years

THE ELEPHANT

Through the jujgle the elephant goes,
Swaying his trunk to and fro,
Munching, crunching, tearing leaves,
Staming seeds, eating tress,
His eyes were small, his feet are fat,
Hey, elephant, don't do that!

Saurav Raj
S/o Dr. Manoj Kumar
Class-II Sec-E
Age-6 years

संतुलित पारिवारिक जीवन

जब मेरी शादी हुई और मैं अपने ससुराल में आई तो इनके घर का वातावरण बहुत अलग-अलग सा लगता था हालांकि मुझे सब बहुत प्यार करते थे। परन्तु फिर भी मन में एक शान्ति नहीं थी। विचारों के कारण मैं बहुत विचलित रहती थी। मेरे पति भी कभी-कभी मुझे मेरे घर वालों को लेकर ताना मार देते थे। वैसे तो मेरे पति मुझे बहुत प्रेम करते थे, और पहले जब ये छुट्टी आते थे तो ज्यादातर घर से बाहर ही रहते थे। अपने दोस्तों के साथ व्यस्त रहते थे, और कई बार तो घर पर शराब पी कर भी आ जाते थे। फिर इनकी बदली गुप केन्द्र, रामबाग, श्रीनगर में हो गई और जीवन उसी प्रकार से चल रहा था। फिर एक दिन मेरे पति का फोन आया और वह फोन में बात करते समय बहुत खुश लग रहे थे, और उन्होंने बताया कि मैंने एक पद्यति को जॉइन करके आनंदित हो रहा हूँ, और मेरे जीवन में एक अद्भुत बदलाव आया है। बाकि मैं आप से मिलने के बाइ इस आलोकिक खुशी का इजहार करूँगा। फोन पर ये सब बातें सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा, तथा मैं इनके आने का बेसबरी से इंतजार करने लगी। कुछ ही दिन बाद मेरे पति घर छुट्टी आये और वह बहुत खुश लग रहे थे, और सभी से प्यार और सत्कार से मिल रहे थे। जैसे ही शाम हुई मैंने पहले की तरह सोचा कि शायद ये यारों दोस्तों के साथ मौज मस्ती करेंगे लेकिन मैं इनको देखकर अचंभित रह गई जब मैंने इनको कमरे में ध्यान करते देखा, मेरे मन में ख्याल आया कि ये सदमार्ग की ही सिखलाई है, जो इनमें इस तरह का अद्भुत बदलाव आया है। शायद मेरी

शादी के बाद की पहली ऐसी छुट्टी थी जो एक-एक पल को खुशी से बिताया। फिर एक दिन इन्होंने मुझे ये खुश खबरी दी, कि ये मुझे अपने साथ लेकर चलने वाले हैं, यहाँ आकर मुझे इनके व्यवहार में बहुत से बदलाव दिखे, जो कि पहले नहीं थे। यह हमेशा खुश रहने लगे और विशेषकर सबको एक समान देखने कि बात करने लगे, एक दिन सुबह लगभग 05 बजे का समय था, जब मैं ये देखकर हैरान हो गई कि ये कोणे पर बैठे हैं, मैंने इनको हिलाया तो इन्होंने कहा बाद में बताता हूँ। अभी मुझे ध्यान करने दो, बाद में इन्होंने बताया कि इस ध्यान के कारण ही इनके जीवन में ये सब बदलाव आए हैं। ध्यान आपके जीवन में सच में इतने बदलाव ला सकता है कि ये सोचकर मैं। हैरान थी फिर मैंने इनके सामने जब ध्यान करने की बात रखी तो बहुत खुश हुए मुझे भी इसके बारे में बताया तथा मैडम श्रीमती रजनी दत्ता जी से मिलवाया, जोकि स्वयं पिछले 10 वर्षों से ध्यान कर रही हैं। साथ ही जो मैंने यहाँ आकर अनुभव किया और देखा इन सबका आपसी प्यार, भाईचारा, प्रेम, सौहार्द, ये सब देखकर मुझे बहुत ही अच्छा लगा। यकिन कीजिए एक साधारण सी प्रक्रिया से इतने असाधारण परिणाम एक चमत्कार ही लगता है। परन्तु यह मेरे जीवन की एक वास्तविकता है। अब मैं अपने पारिवारिक जीवन के साथ-साथ इस आध्यात्मिक जीवन से बहुत खुश हूँ।

सिमरन

Just Take Care



Athira Dinesh

D/o G. Dinesh, D/Commtd

There was a blind girl who hated herself just because she was blind. She hated everyone except her friend. She said to him, if she could only see him, she would marry the friend.

One day, some one donated a pair of eyes to her and then she could see everything, including her friend. Her friend asked her, "Now you can see the world, will you marry me?" The girl was shocked as she saw that her friend was blind too and refused to marry him.

Her friend walked away in tears later he wrote a letter to her saying

**JUST TAKE CARE OF
MY EYES PLEASE'.**

माँ



माँ है ममता की मूरत, **श्रीमती इन्द्रा मन्हास**
कितनी प्यारी है उसकी सूरत।

पाल-पोसकर हमें बड़ा बनाती है।

हमें सारा संसार दिखलाती है।

हमें जो इतना प्यार करें।

सुबह उठकर तैयार करें।

रात को अगर नींद न आए,

पास बुलाकर लोरी सुनाए।

परीक्षा में अगर अच्छे नंबर आएँ

तो बाहर जाकर तोहफा दिलाए।

कभी बादलों में छिप जाती।

रात को हमेशा लौट कर आती।

सपनों का सुन्दर गाँव है माँ,

प्यार की टंडी छाँव है माँ।

सोचो तो यह चीज है क्या,

यह है मेरी प्यारी माँ।

माँ मुझे डर लगता है



श्रीमती पूनम रजक

सूरज की रोशनी अब आग सी लगती है,

पानी की बूंदें भी तेजाब सी लगती है।

माँ मुझे डर लगता है

माँ याद है, वो काँच की गुड़िया जो बचपन में टूट गई थी,

माँ कुछ ऐसे ही आज मैं टूट गई हूँ मेरी गलती कुछ भी न थी,

माँ फिर भी खुद से रूठ गई हूँ

माँ बचपन में स्कूल टीचर की गंदी नजरो से डर लगता था

पड़ोस के चाचा के नापाक इरादों से डर लगता था

माँ वो नुक्कड़ के लड़कों की बेवकूफ भरी बातों से डर लगता था

और अब बॉस की बहसी इरादों से डर लगता है

माँ मुझे छुपा ले बहुत डर लगता है।

माँ मुझे याद है, तेरे आँगन में चिड़िया सी फुदक रही थी

ठोकर खाकर मैं जमीन पर गिर पड़ी थी

दो बूँद खून की देख के माँ तू भी रो पड़ी थी माँ मुझे डर लगता है

माँ तूने तो मुझे फूलों की तरह पाला था

उन दरिदों का आखिर मैंने क्या बिगाड़ा था

क्यों वो मुझे इस तरह मसल कर चले गए

बेदर्द मेरी रूह को कुचल कर चले गए, माँ मुझे डर लगता है

माँ तू तो कहती थी अपनी बेटी को दुल्हन बनाएगी

मेरे इस जीवन को खुशियों से खूब सजाएगी

माँ क्या वो दिन जिन्दगी कभी न लाएगी, माँ मुझे डर लगता है

माँ क्या तेरे घर बारात न आएगी,

जो खोया है मैंने क्या फिर से कभी न पाऊँगी

माँ धुर्ररते है सब मुझे अलग ही नजरो से,

माँ उन नजरों से बचा ले मुझे, माँ मुझे डर लगता है



Smt Suneeta Trivedi, President CWA
planting a sapling during
'My Earth, My Duty' campaign

Smt Suneeta Trivedi, President CWA presenting a bouquet to
Dr. A.P.J. Abdul Kalam, Former President of India



सीआरपीएफ ने लगाया स्वतदान शिविर



सोनीपत, सीआरपीएफ कैप में अयोध्या रक्तदान के शिविर का उद्घाटन करती हुई मुख्यअतिथि सुनीता प्रियेदी।

सोनीपत. सीआरपीएफ क्राय में आयोजित किया गया। जिसमें मुख्यअतिथि सुनीता त्रिवेदी।
सोनीपत। केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) की तरफ से सोमवार को गांव खेवड़ा में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्यअतिथि कावा की अध्यक्ष सुनीता त्रिवेदी रही। वहीं अध्यक्षता सीआरपीएफ के महानिरीक्षक सूरज भान काजल ने की। शिविर में सीआरपीएफ के जवानों आम जनता ने भी रक्तदान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते बल ने कहा कि सीआरपीएफ विश्व की सबसे बड़ी और पांच सिग्नल बटालियन है। इसमें तीन महिला निधि सुनीता ने कहा कि जा रहा है।

सीआरपीएफ कैंप खेत में खुला मॉटेसरी स्कूल

मास्कर न्यूज / रॉड

सीआरपीएफ कैप खेवड़ा में मंगलवार को परिवार कल्याण संस्था को अध्यक्ष सुनीता त्रिवेदी ने मॉटेसरी स्कूल व शांति कामलेक्स का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि शिक्षा से सभ्य व विकसित समाज का निर्माण किया जा सकता है। कार्यक्रम का निमोण किया परिवार कल्याण संस्था की अध्यक्षता अध्यक्ष सुनीता काजल ने की। सुनीता त्रिवेदी ने कहा कि शिक्षा से ही विकास संभव है। सीआरपीएफ के जवानों के बच्चों को भी नर्सरी से ही उच्च शिक्षा मिल सके, इसी उद्देश्य को लेकर मॉटेसरी स्कूल खोला गया है। इस प्रयास से केप में भाईचारे का विकास भी होगा। एक ही जगह रहने व शिक्षा मिलने से जुड़ाव की भावना का विकास होता है। उन्होंने इसके



गईं, सीआरपीएफ कैप में गंदेसरी स्कून का अप्पार्टन करतीं तुनीरा प्रियेयी।
कहा कि सामाजिक कार्य करने से के अलगाव नहीं।
मन को शांति मिलती है। एक नई

को शांति मिलती है। एक फौजी को जीवन होता ही देश की सेवा के लिए है। फौजी के बच्चों-बच्चों को भी प्रकाश की सुविधाएं मिल सकें, उनके लिए कैम्प में आधुनिक भवनों के अलावा शांतिपूज्य कामलेक्स, स्कूल व अन्य सुविधाएं दी जा रही हैं। इस मौके पर महानिरीक्षक सुरेशभाषन काजल, उनके गौतम, वीरेंद्रपाल पांडेय, हिलावर राठी, वजीर सिंह, रामकुमार, ब्रजपाल आदि मौजूद थे।

शविर में 160 यूनिट
रक्त एकत्रित किए



सोनीपत। रक्तदाता को बैज लगाते हुए कक्षा अध्यक्ष सुनीता शिवेदी व आईजी सुरजधन काजल

हरिभूमि न्यूज . सोनीपत

गांव खेवड़ा स्थित सीआरपीएफ ग्रुप केंद्र में सोमवार को काया दिवस के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ काया अध्यक्षा सुनीता त्रिवेदी द्वारा किया गया। शिविर में गैरी कल्च की अध्यक्षा अनिता भारद्वाज सदस्य मंजरी

तथा कावा अथवा सुनीता त्रिवेदी के विजन से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। रक्तदान करने से व्यक्ति के शरीर से रक्त कम नहीं होता अपितु रक्त बढ़ता है। कावा अथवा सुनीता त्रिवेदी ने बताया कि केजी रिजर्व पुलिस बल विभाग है।

सी.आर.पी.एफ. केंद्र में परिवार कल्याण केंद्र, शॉपिंग मॉल व मोटेसरी स्कूल का उद्घाटन



(संक्षेप)

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते जवान।

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं।
सोनीपत, 3 जून (प्रेस): खेवड़ा में ब
स्थित केंद्रीय रिजर्व पुलिसबल के
ग्रुप केंद्र में नवनीमित परिवार कल्याण
केंद्र, शांति कॉम्प्लेक्स व मोटसरी
स्कूल के बच्चों का उद्घाटन किया
गया। सी.आर.पी.एफ. परिवार कल्याण
संस्था की अध्यक्ष सुनीता त्रिवेदी
संस्था की मुख्यातिथि थीं। समारोह

में बल के जवानों ने गंगा सौ... पुलिस
कार्यक्रम प्रस्तुत किए। पुलिस
महानिरीक्षक सुरजभान काजल व
सुनीता काजल ने मुख्यातिथि का
स्वागत किया। मुख्यातिथि ने कहा
कि ग्रुप केंद्र में तीव्रगति से हो रहे
निर्माण कार्य से परिसर की तस्वीर ही
बदल गई है। यह बल हमारे देश की

'सीआरपी केंद्र में खोला गया परिवार कल्याण केंद्र'



रोनीपत रियल सीआरपीएफ के कैंप में खुनीता भिखारी को ड्यूटी दिवात भेंट
करती एक पुलिस अधिकारी। -रुद्र

रोनीपत, 3 जून (रुद्र)

केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल परिवार कल्याण संस्था को अध्यक्ष सुनीता शिवोनी ने कहा कि ग्रुप केंद्र में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने लिए परिवार कल्याण गंगा है।

मौल व मोटेसरी स्कूल का उद्घाटन
रही परिसर की तस्वीर : मि



(संक्षेप)

माटोसरी स्कूल का उद्घाटन करती सुनीता त्रिवेदी।

माटिसरी स्कूल का उद्घाटन करती सुनीता त्रिपाठी

सुरक्षा की दूसरी पॉइंट में है जोकि आंतरिक सुरक्षा का दायित्व निभाती है। सूरजभान काजल ने कहा कि बल को कुछ इकाइयां काफी दुर्गम क्षेत्रों में इधर-उधर कर रही हैं जहां आधारभूत सुविधाएं भी नहीं मिल पाती हैं। ग्रुप केंद्र में परिवार कल्याण केंद्र, शॉपिंग कॉम्प्लेक्स व माटिसरी स्कूल खुल

जाने से केंद्र में कार्यरत अधिकारियों व जवानों के पस्त्रा व महिलाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे तथा उनकी आजीविका में भी सुधार होगा। इस मौके पर नीतू डी. भट्टाचार्य, डी.एस. लाक्खा सहित राजपत्रित अधिकारी, अधीनस्थ अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।

